राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)-2020 और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप

व्याकरण वाटिका

सहायक पुस्तिका

1-5

FROLIC BOOKS

हिन्दी व्याकरण वाटिका - कक्षा -1

पाठ-1 (भाषा)

1. क. भाषा ख. मौखिक

2. क. भाषा विचार व्यक्त करने का माध्यम है।

   ख. भाषा के दो रूप होते हैं।

पाठ-2 (वर्ण और वर्णमाला)

1. क. ध्वनियाँ ख. शब्द

2. क. तरह की आवाजें (ध्वनि)

   ख. वर्ण

   ग. दो

3. क √ ख. × ग. √

पाठ-3 (मात्राएँ)

1. क. मात्रा ख. उ, ऊ और ऋ की मात्रा

2. क. कुत्ता ख. घोड़ा ग. गुलाब घ. कृष्ण

3. क. ख्+अ+र+अ+ग्+ओ+श्+अ

   ख. छ् + अ + त् + अ + र + ई

   ग. स् + ऊ + र + अ + ज + अ

4. क. व्यंजन के बाद आने वाले स्वर को मात्रा कहते हैं।

   ख. इ- पिता, गिलास, तिथि, किसान, दिन

   ई - नकली , माली , दादी , हाथी , घनी।

पाठ-4 (शब्द और वाक्य)

1. क. शब्द ख. लकम ग. शब्दों के मेल से।

2. आम , हिरन , मोर , नाला , पैसा, सूरज , गुलाब।

3. क. पिताजी सेब लाए हैं।

ख. सोहन खेल रहा है।

ग. आज मनु गीता पढ़ेगा।

घ. यह टॉफी अच्छी नहीं है।

ड. बिल्ली ने चूहा पकड़ा।

4. क. बकरी , मेज, सड़क, गगन , भारत , अंगूर

5. क. वर्णो का ऐसा मेल जिसका कोई अर्थ हो, शब्द कहलाता है।

ख. शब्दों के सार्थक मेल को वाक्य कहते है।

पाठ-5 (संज्ञा)

1. क. नाम ख. संज्ञा ग. ताजमहल

2. क. हिमालय , सतपुड़ा , विंध्याचल।

ख. दिल्ली , राजस्थान , बिहार

ग. भारत , रूस , अमेरिका

घ. जनवरी , फरवरी , मार्च।

ड. गंगा , यमुना , शारदा।

3. क. किसी प्राणी, व्यक्ति वस्तु , स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते है।

ख. बचपन , बुढ़ापा।

पाठ-6 (लिंग)

1. क. लिंग , ख. दो ग. पुल्लिंग

2. मामा , राजा , गुड्डा , बेटा , छात्र , कटोरा।

3. ताई गाय

दादी घोड़ी

अध्यापिका नौकरानी

दूल्हन देवरानी

माता छात्र

4. क. जिस शब्द के पुरुष व स्त्री जाति का बोध हो उसे लिंग कहते हैं।

ख. लिंग के दो प्रकार होते है।

1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

पाठ-7 (वचन)

1. क. वचन ख. दो ग. बहुवचन

2. 3 घोड़े , 1. कछुआ , 3 नौकाएँ, 5. मछलियाँ , 2. बिल्लियाँ, 3 गेंदें।

3. क. संज्ञा - शब्द का जो रूप संख्या का बोध करता है, उसे वचन कहते हैं।

ख. शब्द के जिस रूप से एक संख्या का बोध होता है उसे एकवचन कहते है।

ग. शब्द के जिस रूप से एक से अधिक संख्या का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते है।

पाठ-8 (सर्वनाम)

1. क. सर्वनाम ख. हाँ ग. सर्वनाम

2. क. मैं उसे

ख. आप तुम्हें

ग. हम आपको

घ. तुम मुझे

ड. वह हमें

3. क. मुझे ख. उसका, मेरा ग. मुझसे

घ. तुम्हाराड. तुमको

4. क. हम - हम वीरता के पुजारी हैं।

ख. वह- वह एक अच्छा लड़का है।

ग. आप- आप मुझसे बड़े हो।

घ. तुम - तुम प्रतिदिन कितने घण्टे पढ़ते हो?

5. क. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते है, उन्हें सर्वनाम कहते है।

ख. मैं , हम, तुम, वह, उन्हें।

पाठ-9 (विशेषण)

1. क. संज्ञा की ख. विशेष्य ग. काला

2. मोटा आम, बड़ा मकान , लंबा साड़ी , अच्छा आदमी,
काला कुत्ता, लंबा सड़क।

3. क. काला

ख. दो

ग. पीली

घ. मीठा

4. हाथी , करेला , नेत्रहीन व्यक्ति
बहुत बड़ा, सनकी, बच्ची

5. क. वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है, विशेषण कहलाते है।

ख. विशेषण जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, वे विशेष्य कहलाते है।

पाठ-10 (क्रिया)

1. क. किसी कार्य के होने या करने का

ख. क्रिया के बिना

ग. हँसना

2. दौड़ना , तैरना , पढ़ना , सोना , खेलना , गाना , उड़ना , पीना

3. क. पढ़ रहे है।

ख. पीता है।

ग. तोड़ता है।

घ. उड़ रही हैं।

4. क. गाती ख. उगाता ग. दौड़

घ. दौड़ ड. हैं।

5. क. जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है।

ख. क्रिया के बिना कोई भी वाक्य पूरा नहीं होता।

पाठ-11 (शुद्ध वर्तनी)

1. क. आकाश ख. आज्ञा ग. स्कूल

घ. उधार ड. जय

पाठ-12 (पर्यायवाची शब्द)

1. क. नौका माँ

ख. आग दिवस

ग. माता भूमि

घ. दिन नाव

ड. पृथ्वी अग्नि

च. आकाश अश्व

छ. बादल रसाल

ज. घोड़ा पानी

झ. आम गगन

ञ. जल घन

2. क. पक्षी - खग, विहग।

ख. राजा - नृप , भूप।

ग. झंडा - ध्वज , पताका।

घ. गंगा - भागीरथी , मन्दाकिनी।

ड. दाँत - दंत , रदन।

च. पेड़ - वृक्ष , गाछ।

3. क- समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

ख. पर्यायवाची शब्द का दूसरा नाम समानार्थक शब्द है।

पाठ-13 (विलोम शब्द)

1. क. उत्थान हार

ख. नया घृणा

ग. गर्म ठंडा

घ. प्रेम पतन

ड. जीत पुराना

च. प्रातः छाँव

छ. आय विष

ज. धूप थोड़ा

झ. अमृत व्यय

ञ. अधिक सायं

2. दुराग्रह, दुर्जन , प्राचीन , हानि ,
भलाई, दूर, विष, साहसी

3. क. जो शब्द आपस में विपरीत अर्थ बताएँ, वे विलोम शब्द कहलाते हैं।

ख. विलोम शब्द का दूसरा नाम विपरीतार्थक शब्द है।

पाठ-14 (साल , महीने)

1. क. चैत्र छ. अश्विन

ख. वैशाख ज. कार्तिक

ग. ज्येष्ठ झ. मार्गशीर्ष

घ. आषाढ़ ञ. पौष

ड. श्रावण ट. माघ

च. भाद्रपद ठ. फाल्गुन

पाठ-15 (हिंदी की संख्याएँ)

1. अपने आप करें।

2. चालीस , आठ

सैंतीस इकतालीस

उनतालीस एक सौ अड़तीस

पाठ-16 (कहानी-लेखन)

1. क. हंस और कौआ।

एक पर्वतीय नगर था। वहाँ सड़क के किनारे एक वृक्ष पर एक कौआ रहता था। उसी वृक्ष पर एक हंस भी रहता था। दोनों में अच्छी मित्रता थी। दोनों दूर-दूर तक आकश में उड़ते थे पेड़ पर उछल-कूद करते थे और खुश रहते थे।

एक दिन कौआ और हंस दोनों पेड़ पर बैठे हुए थे। उन्होंने एक ग्वाले को सिर पर दधिपात्र लेकर सड़की पर से गुजरते हुए देखा। दही देखकर कौए के मुँह में पानी भर आया। उसने हंस से कहा, ''चलो, हम दोनों दही की हांडी के मुँह पर बैठकर दही का स्वाद लें। ''हंस ने कहा, ''इस तरह चोरी से किसी की चीज खाना अच्छी बात नहीं है। मैं तो नहीं आऊँगा।'' इस पर कौए ने हंस को अपनी मित्रता की कसम खिलाई और बलपूर्वक,

खींचकर उसे दही की हांडी के मुख पर ले गया। कौआ चोंच मटका-मटकाकर दही का स्वाद लेने लगा, जबकि हंस चुपचाप बैठा रहा।

अचानक ग्वाले को हांडी पर किसी के होने की अनक लगी। उसने एक हाथ से हांडी कसकर पकड़ी और दूसरा हाथ ऊपर उठाकर टटोलने लगा। आहट पाते ही कौआ फौरन उड़ गया और हंस ग्वाले की पकड़ में आ गया। क्रोधिक ग्वाले ने हंस को मार डाला।

हंस ने दुष्ट कौए की संगति की। इसलिए उसे जान से हाथ धोना पड़ा।

सीखः- दुष्ट की संगत जानलेवा होता है।

व्याकरण वाटिका -2

पाठ-1(भाषा)

1. क. विचारों के आदान प्रदान का

 ख. तीन ग. लिपि

2. क. प्रकट ख. हिंदी ग. बोलकर घ. गुरुमुखी

3.

	प्रांत	भाषा
क.	गुजरात	मलयालम
ख.	तमिलनाडु	हिंदी
ग.	राजस्थान	गुजराती
घ.	केरल	तमिल

4. क. भाषा का शाब्दिक अर्थ है- कहना , बताना या प्रकट करना।

 ख. जिस साधन के द्वारा व्यक्ति अपने विचार दूसरों तक पहुँचाता है और उनके विचार सुनता है, वही भाषा है।

 ग. भाषा के तीन भेद होते है।

 1. लिखित भाषा
 2. मौखिक भाषा
 3. सांकेतिक भाषा

 घ. हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है।

पाठ-2(वर्ण-विचार)

1. क. वर्ण ख. स्वर

2. क. हल - ह् + अ + ल् + अ

 ख. थैला - थ् + ऐ + ल् + आ

ग. फौजी - फ् + औ + ज् + ई

घ. फूल - फ् + ऊ + ल् + अ

3. क. पैंतीस ख. वर्ण ग. अंतःस्थ

4. क. वह ध्वनि जिसके खंड नहीं हो सकते, वर्ण कहलाती है।

ख. किसी भाषा के सभी वर्णों को एक समूह में लिखा जाता है। इसी समूह को वर्णमाला कहते है।

ग. वे वर्ण जो स्वंतत्र रूप से बोले जाते है, स्वर कहलाते है।

घ. जो वर्ण स्वरों को सहायता से बोले जाते है, व्यंजन कहलाते हैं।

ड. कुछ व्यंजन सम्मिलित रूप में भी लिखे जाते हैं। इन्हें संयुक्त व्यंजन कहा जाता है।

पाठ-3(शब्द और वाक्य)

1. क. वाक्य से ख. शब्दों से ग. मेज

2. क. बतख ख. पनघट

ग. घ. तरकश

3. क. पत्थर ख. गृह

ग. मुरली घ. चश्मा

4. क. रमा स्वेटर बुनती है।

ख. गुरू जी पढ़ा रहे है।

ग. अंबर सीरियल देखता है।

घ. बच्चे शोर मचाते है।

5. क. तितलियाँ समस्त विश्व में पायी जाती है, समुद्र तल से लेकर उच्च अल्पस्थल तक।

ख. मोर बारिश में भीगने पर अपने पंख फैलाकर नृत्य करते है ताकि पानी उनके पंखों से झड़ जाए।

ग. किसानों को कृषि उत्पादकता बढ़ाने और आधुनिक कृषि तकनीकों को सिखाने के लिए पहल की जानी चाहिए।

घ. पक्षी आकाश में उड़ते है।

6. क. वर्णो (अक्षरों) को जोड़कर शब्दों का निर्माण होता है। प्रत्येक शब्द का अपना एक अर्थ भी होता है।

ख. दो या उससे अधिक शब्दों के जोड़ से वाक्य बनाए जाते हैं।

पाठ-4(संज्ञा' नाम वाले शब्द)

1. क. संज्ञा ख. अमेरिका ग. सुख

2. क. कमल मंदिर व्यक्ति का नाम

ख. भारत नगर का नाम

ग. गुड़हल फल का नाम

घ. सतंरा पशु का नाम

ड. इंदौर देश का नाम

च. हाथी फूल का नाम

छ. जूली भवन का नाम

3. रमेश , रोना , आगरा , अंगूर , विद्यालय , सोना

4. क. किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान व भाव के नाम को संज्ञा कहते है।

ख. ताजमहल , लालकिला , संसद

ग. नागपुर , दिल्ली , मुंबई।

घ. भारत , रूस , अमेरिका

पाठ-5(लिंग)

1. क. पुरूष व स्त्री जाति का

ख. दो

2. क. शिष्य पुल्लिंग

ख. ससुर पुल्लिंग

ग. चाची स्त्रीलिंग

घ. आदरणीय पुल्लिंग

ड. मौसम पुल्लिंग

च. शेरनी स्त्रीलिंग

छ. नौकरानी स्त्रीलिंग

ज. गुणवती स्त्रीलिंग

झ. मालिक पुल्लिंग

ञ. वर्षा

3. क. बेटी ऊँटनी

ख. धोबिन माता

ग. गाय कवयित्री

घ. बलवती विदुषी

4. क. मुरगा

ख. माता जी

ग. प्रधानाचार्या

घ. जादूगर

ड. ऋतु

5. क. जो शब्द पुरूष अथवा स्त्री जाती का बोध कराते है, उन्हें लिंग कहते हैं।

जैसेः-

ख. जिन संज्ञा- शब्दों से पुरूष जाति का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते है।

जैसेः- गुड्डा , सेठ , गुरगा आदि।

ग.   जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते है।

जैसेः- गुड़िया , सेठानी , गुरूगी आदि।

पाठ-6(वचन)

1. क. संख्या का   ख. दो   ग. अनेक का

2. कपड़ा - एकवचन

कविताएँ - बहुवचन

पुस्तक - एकवचन

नौकाएँ - बहुवचन

मशीन - एकवचन

सीढ़ियाँ - बहुवचन

दवाई - एकवचन

मेला - एकवचन

चुहियाँ - बहुवचन

बढ़ई - एकवचन/बहुवचन

लड़की - एकवचन

नदियाँ - बहुवचन

3. बच्चे

कथाएँ

रोटियाँ

बालिकाएँ

सपने

चिड़ियाँ

सपने

चिड़ियाँ

अंगूर

खिड़कियाँ

मात्राएँ

डालियाँ

गुलाब

साँसें

4. क. एक या अनेक वस्तु, व्यक्ति अथवा प्राणी का ज्ञान कराने वाले शब्द वचन कहलाते है।

जैसैः-

ख. वचन के दो भेद होते है-

1. एकवचन 2. बहुवचन

ग. किसी एक वस्तु, व्यक्ति अथवा प्राणी का बोध कराने वाले शब्द को एकवचन कहलाते है।

जैसेः- गेंद , लड़का , मोमबत्ती आदि।

घ. एक से अधिक अथवा अनेक वस्तुओं , व्यक्तियों अथवा प्राणियों का बोध कराने वाले शब्दों को बहुवचन कहते है।

जैसेः- गेंदें, लड़के , मोमबत्तियाँ आदि।

पाठ-7(सर्वनाम)

1. क. संज्ञा के स्थान पर ख. आप ग. मैं

2. क. मैं

ख. वे

ग. तुम

घ. वह

ङ. तुम्हें

च. आप

3. वह मेरे सिनियर हैं, मुझे उनकी बात माननी होगी।

क. आप एक अच्छे इंसान हो।

ख. यदि तुम कड़ी मेहनत करोगे तो इसे कर सकते है।

ग. हम वीरता के पुजारी है।

4. क. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है।

ख. बड़ों के लिए 'आप' सर्वनाम का प्रयोग करेंगे।

पाठ-8(विशेषण)

1. क. विशेषण ख. जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है।

ग. थोड़ा।

2. काला , सुंदर , मोटा।

3. सेब , आदमी , टमाटर।

4.

	विशेषण	विशेष्य
क.	सुंदर	चिड़िया
ख.	मोटा	आदमी
ग.	पेड़	चतुर

5. क. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते है।

ख. जिन शब्दों की विशेषताएँ बताई जाती हे, वे विशेष्य कहलाते है।

पाठ-9(क्रिया)

1. क. काम का ख. लिखना

2. क. कुत्ता भौंक <u>रहा</u> है।

ख. रोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

ग. सूरज सुबह उगता है।

3. क. सुनाती

ख. पीता

ग. खाता

घ. पढ़ते

ड. करता

च. रहा।

4.		संज्ञा	क्रिया
	क.	बिल्ली	नाच रहा है।
	ख.	बच्चा	दूध पी रही है।
	ग.	बंदर	घास खा रही है।
	घ.	धोबी	स्कूल जा रहा है।
	ड.	गाय	रो रहा है।
	च.	रमन	कपड़े धो रहा है।

5. क. जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का पता चले, उसे क्रिया कहते है।

ख. बहना , रोना , धोना , चढ़ना , दौड़ना , पढ़ना आदि।

पाठ-10(काल)

1. क. समय का ख. तीन ग. बीते हुए समय का

2. क. भविष्यत् काल

ख. वर्तमान काल

ग. वर्तमान काल

घ. भूतकाल

ड. भविष्यत् काल

3. क. मोना खाना बना चुकी है।

ख. शीबा कविता लिख रही है।

ग. नमिता सेब खा रही है।

घ. रीना कंप्यूटर पर काम करेगी।

ड. मंजु गीत गा चुकी है।

4. क. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने या करने के समय का बोध हो, उसे काल हैं।

ख. काल के तीन भेद होते है।

1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल

<u>पाठ-12(विराम-चिह्न)</u>

1. क. रूकना ख. , ग. पूर्णविराम्

2. क. प्रश्न चिह्न ख. अल्पविराम ग. विस्मयादिबोधक चिह्न

घ. पूर्णविराम ड. अल्पविराम

3. क. क्या बिल्ली सारा दूध पी गई?

ख. ओह! माँ मर गया!

ग. राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न राजा दशरथ के पुत्र थे।

घ. छी छी तुम कितने गंदे बालक हो!

ड. मैंने उसकी पुस्तक लौटा दी है!

च. क्या आप मुझसे कुछ कह रहे है?

छ. यह कौन गा रहा है?

ज. रमेश, नरेश और सुरेश तीनों पक्के मित्र हैं।

झ. तुम्हारा नाम क्या है? तुम किस कक्षा में पढ़ती हो?

4. क. जिन सर्वसंमत चिह्नों द्वारा , अर्थ की स्पष्टता के लिए वाक्य को भिन्न-भिन्न भागों में बाँटतें है, व्याकरण या रचनाशास्त्र में उन्हें ''विराम'' कहते हैं। ? , ।

ख. वाक्य में जहाँ कही थोड़े से समय के लिए रूकना आवश्यक हो, वहाँ अल्पविराम लगाया जाता है।

ग. जहाँ एक बात पूरी हो जाए या वाक्य समाप्त हो जाए वहाँ पूर्णविराम चिह्न लगाया जाता है।

घ. जब किसी वाक्य में प्रश्न पूछा जाए, तो उस वाक्य के अंत में प्रश्नसूचक चिह्न लगाते है।

ड. जिन वाक्यों या शब्दों के द्वारा आश्चर्य, घृणा, दुःख आदि के भाव होते हैं, उनके अंत में विस्मयादिबोधक चिह्न को लगाया जाता है।

<u>पाठ-12(शुद्ध वर्तनी)</u>

1. क. वे आए है।

ख. गंदे कपड़े न पहनों।

ग. आज रविवार है।

घ. हमनें तुम्हारी बात सुनी है।

ड. वे आपका समान करते है।

च. वह सज्जन आदमी है।

छ. मुझे स्कूल जाना है।

ज. ठंडी हवा चल रही है।

झ. उसने कहा कि रमा की पुस्तक उसके पास है।

ञ. मैं कुशलपूर्वक हूँ।

2. क. भूखा - राज भूखा है।

ख. ईश्वर - रवि ने ईश्वर को प्रसाद चढ़ाया।

ग. प्यासा - राहुल प्यासा हूँ।

घ. भारत - मैं भारत का निवासी हूँ।

ड. पानी - किशन पानी पी रहा है।

च. विश्वास - मैं राम पर विश्वास करता हूँ।

छ. दूध - साँप दूध पीता है।

ज. मंगलवार - रामू मंगलवार को मंदिर जाता है।

3. क. बिल्ली - बिल्ली दूध पी रही है।

ख. सड़क - रीना सड़क पाड़ कर रही है।

ग. परीक्षा - सीता परीक्षा में प्रथम आती है।

घ. सहायता - राधा ने गरीबों की सहायता की।

ड. प्रतीज्ञा - सीमा रीना की प्रताज्ञा कर रही है।

च. रात - प्रार्थना रात को किताब पढ़ की सोती है।

ज. बात - सीमा ने राधा से बात की।

पाठ-13(विलोम शब्द)

1. क. ठंडा , पतला , नीचे , उजाला।

2. क. आशा बाहर

ख. सुगंध छोटा

ग. भीतर निराशा

घ. बड़ा दुर्गंध

3. क- उल्टे अर्थ का बोध कराने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते है।

ख. विलोम शब्द का दूसरा नाम विपरीतार्थक है।

ग. 1. आगे - पीछे

2. दिन - रात

3. जीत - हार

4. कठिन - सरल

पाठ-14(पर्यायवाची शब्द)

1. क. स्त्री , महिला , औरत।

   ख. समीर , अनिल , वायु।

   ग. नृप , नरेश , भूप।

   घ. देवनदी , भागीरथी , मंदाकिनी।

   ड. आसमान , व्योम , गगन

2. पर्यायवाची वाक्य

   क. पानी - पानी , पृथ्वी पर रहने वालों के लिए सबसे महत्वपूर्ण पदार्थों में से एक है।

   ख. गृह - घर एक ऐसी जगह है जहाँ हम रहते है।

   ग. धरती - पृथ्वी के बिना पूरी ब्रह्मंड में कहीं भी जीवन संभव नहीं है।

   घ. स्वर्ण - स्वर्ण मंदिर पंजाब राज्य के अमृतसर में स्थित है।

   ड. सरोज - कमल एक सुदर फूल है।

पाठ-15(शब्द - समूह के लिए एक शब्द)

1. धनी

   अवरोही

   अनाथ

   चुगलखोर

   मृदुभाषा

   निर्दोष

अनुज

2. शब्द - समूह के लिए एक शब्द का अन्य नाम वाक्यांश है।

पाठ-16(मुहावरे)

1. क. आँसु पोछना — पछताना

   ख. काला अक्षर भैंस बराबर — दिलासा देना

   ग. आग बबूला होना — विषय के बिल्कुल भी जानकारी न होना।

   घ. जी चुराना — अत्यंत क्रोधित होना

   ड. हाथ मलना — काम से बचने के लिए बहाने करना

2. क. बहुत हर्ष मनाना - यदि मेरी लाटरी निकल जाए तो घी के दीये जलाँऊगा।

   ख. बुरी तरह हंसना - मैच में आस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए।

   ग. व्यर्थ में दखल देना- दूसरों के मामलों में टाँग अड़ाना अच्छी बात नहीं है।

   घ. भाग जाना - पुलिस को देखते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गया।

व्याकरण वाटिका - कक्षा - 3

पाठ-1(भाषा)

1. क. दो ख. ध्वनि ग. अनेक
2. स्वंय करे।
3. स्वंय करे।
4. क. हिंदी ख. मराठी
   ग. मलयालम घ. गुजराती
5. क. 'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाषा' धातु से बना है। इसका अर्थ - बोलना।
   ख. 'भाषा' का शाब्दिक अर्थ है- अपने विचारों को कहना या व्यक्त करना।
   ग. भाषा के दो रूप होते है।
      1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा
   घ. जब हम लिखकर अपने विचार प्रकट करते है उसे लिखित भाषा कहते है।

पाठ-2(वर्ण, वर्णमाला और मात्रा)

1. क. वर्ण ख. ग्यारह ग. तैंतीस
2. क. प्रत्येक शब्द कुछ ध्वनियों से बना है।
   ख. सभी वर्णो को निश्चित क्रम में रखने पर वर्णमाला बनती है।
   ग. स्वर ध्वनियों के उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती।
   घ. व्यंजनो का उच्चारण करते समय अंत में स्वर 'अ' की ध्वनि होती है।
   ड. स्वरों के चिन्ह मात्रा कहलाते है।
3. क. दैनिक
   ख. नियमित
   ग. गोपाल
   घ. हिमालय

ङ. गौतम

च. पुरोहित

4. क. स् + ए + त् + उ

ख. ल् + अ + च् + ई + ल् + आ

ग. द् + इ + व् + आ + क् + अ + र् + अ

घ. स् + औ + द् + आ + ग् + अ + र + अ

ङ. ज् + अं + ग् + अ + ल् + अ

च. व् + इ + द् + ए + श् + ई

5. क. वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई कहलाती है क्योंकि इनके और टुकड़े नहीं किए जा सकते है।

ख. स्वर- इन ध्वनियों का उच्चारण करते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है।

व्यंजन - इन ध्वनियों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है प्रत्येक व्यंजन का उच्चारण करते समय अंत में 'अ' की ध्वनि होती है।

ग. भाषा के सभी वर्णो को निश्चित क्रम में रखने पर वर्णमाला बनती है।

घ. भाषा - अपने विचारों को कहना या व्यक्त करना भाषा कहलाता है।

ङ.

	स्वर	व्यंजन
1.	स्वर का उच्चारण करते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है।	व्यंजन का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है।
		व्यंजन का उच्चारण करते समय 'अ' की ध्वनि होती है।

2. स्वरों की 11 संख्या होती है। व्यंजनों की 33 संख्या होती है।

पाठ-3(शब्द- विचार)

1. क. शब्द ख. दो ग. निरर्थक
2. सार्थक - फूल , पानी , कागज , बालक , लेट

   निरर्थक- रानी, शेर , वूल , नालक , वागज
3. सार्थक - पुस्तक , घर

   निरर्थक - वपड़ा वुस्तक
4. क. वर्णो का सार्थक समूह शब्द कहलाता है।

   ख. अर्थ के आधार पर शब्द के दो भेद होते है।

   1. सार्थक 2. निरर्थक

पाठ-4(वाक्य)

1. क. वाक्य ख. उद्देश्य ग. विधेय
2. उद्देश्य विधेय

   क. हमने खाना खा लिया है।

   ख. बिल्ली सारा दूध पी गई।

   ग. कार तेज चलती है।

   घ. डाकिया पत्र ला रहा है।

   ड. चाचा जी एक पुस्तक लाए।
3. उद्देश्य विधेय

   क. हलवाई जलेबी बना रहा है।

   ख. वे सब खेल रहे है।

   ग. हम स्कूल जा रहे है।

घ. अध्यापक जी पुस्तक पढ़ा रहे है।

ड. पिताजी मिठाई लाए है।

4. क. पुलिस ने

ख. चोर

ग. राम

घ. सोहन ने

ड. बेलगाड़ी

5. क. पूरा अर्थ प्रकट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते है।

ख. वाक्य को दो भागों में बांटा गया है।

पाठ-5(संज्ञा)

1. क. भाववाचक ख. जातिवाचक ग. भाववाचक

घ. व्यक्तिवाचक ड. जातिवाचक च. जातिवाचक

2. क. √ ख. √ ग. √

घ. × ड. √

3. क. हमने (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

ख. सैनिक (जातिवाचक)

ग. नमिता (व्यक्तिवाचक)

घ. सभी (जातिवाचक)

ड. क्रिकेट (व्यक्तिवाचक)

च. दादा जी (जातिवाचक)

4. मित्रता सुंदरता नम्रता

मधुरता कठोरता

5. क. किसी प्राणी, स्थान , वस्तु और भाव के नाम को संज्ञा कहते है।

ख. संज्ञा के भेद - व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक।

ग. विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का नाम व्यक्तिवाचक संज्ञा होता है।

घ. भाववाचक संज्ञा - सुगंध , मित्रता , हरियाली , गुस्सा।

पाठ-6(लिंग)

1. क. स्त्री या पुरुष जाति का ख. दो

   ग. सरदी घ. जादूगर

2. लुटिया लुहारिन टोकरी

   दर्जिन शेरनी घोड़ी

   बेटी सेठानी हथिनी

3. क. चूहा पीछे रह गया।

   ख. हथिनी

   ग. छात्र

   घ. लड़की

4. क. संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष जाति या स्त्री जाति के होने का बोध हो उसे लिंग कहते है।

   ख. लिंग के दो भेद होते है - स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग।

पाठ-7(वचन)

1. क. बहुवचन का ख. इयाँ में ग. सेनाएँ

2. एकवचन - गुब्बारा , पंखा , लड़की , बोतल , गुड्डा

   बहुवचन - कमीजे , कपड़े , संतरे , घड़ियाँ, जूते।

3. क. संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या, उसके एक या अनेक होने का पता चले उसे वचन कहते है।

   वचन दो प्रकार के होते है- एकवचन, बहुवचन

ख. शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का पता चले उसे एकवचन कहते है।

जैसेः- केला , तोता।

ग. शब्द के जिस रूप से उसके दो या दो से अधिक होने का पता चले उसे बहुवचन कहते है। जैसे - केले, तोते।

पाठ-8(सर्वनाम)

1. क. मैं काम कर सकता हूँ।

ख. उसने शीशा तोड़ा है उसको बुलाओ।

ग. उनके पिताजी आए है।

घ. इसको बल्लेबाजी कराओ।

2. क. वह ख. तुम्हारा ग. कोई

घ. उसे ड. जैसा , वैसा

3. क. जो सर्वनाम शब्द बोलने वाले, सुनने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग किए जाते है, पुरूषवाचक सर्वनाम कहलाते है।

ख. निश्चयवाचक सर्वनाम- यह, वह और ये निश्चित व्यक्तियों और वस्तुओं का बोध कराते है।

ग. प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिन सर्वनामों शब्दों से प्रश्न का बोध हो, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते है जैसे- कौन, किसने क्या आदि।

घ. जो सर्वनाम वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध जोड़ते है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते है।

पाठ-9(विशेषण)

1. क. संज्ञा की ख. चार

2. क. सूखे ख. हरी ग. तिरंगा

घ. ऊँची ङ. बूँढ़ा च. मधुर

3. स्वंय करे।

4. क. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाता है।

ख. विशेषण शब्द जिनकी विशेषता बताते है, वे विशेष्य कहलाते है।

ग. जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित या अनिश्चित संख्या बताते है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते है।

घ. जो सर्वनाम शब्द विशेषण के रूप में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते है।

जैसे - ये कपड़े इस कमरे में रख दो।

पाठ-10(क्रिया)

1. क. क्रिया ख. वाक्य ग. लिंग का

2. क. अध्यापिका पढ़ा रही है।

ख. सुरेश फूल तोड़ रहा है।

ग. मदारी बंदर को नचा रहा है।

घ. धोबी कपड़े धो रहा है।

3. ख. पढ़ना - रमेश पढ़ रहा है।

ग. तैरना - सीमा तैर रही है।

घ. हँसना - रमा हँस रही है।

4. क. वाक्य में जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उसे क्रिया कहते है।

ख. क्रिया के बिना वाक्य अधूरा है इसलिए क्रिया को वाक्य में महत्वपूर्ण माना जाता है।

पाठ-11(काल)

1. क. भूतकाल ख. वर्तमान काल ग. आने वाले समय को

2. क. भूतकाल ख. वर्तमान काल ग. वर्तमान काल

   घ. भविष्यत् काल ड. भूतकाल

3. क. सुधीर गेंद फेंकेगा।

   ख. हम रात को सोए थे।

   ग. शीतल बाजार गई थी।

   घ. वह आ गया है।

4. क. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने या करने के समय का बोध हो, उसे काल कहते है।

   ख. काल के तीन भेद है- 1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल

   ग. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य बीते समय में हो चुका या हो रहा था उसे भूतकाल कहते है।

   घ. क्रिया के जिस रूप से यह प्रकट हो कि काम अभी जारी है, उसे वर्तमान काल कहते है।

पाठ-12(अविकारी शब्द या अव्यय)

1. क. चार प्रकार के ख. क्रिया की ग. विस्मयादिबोधक शब्द

2. क. √ ख. √ ग. × घ. √

3. क. आज ख. और ग. और

   घ. वाह! ड. आज

4. क. अव्यय ख. विस्मयादिबोधक

   ग. विस्मयादिबोधक घ. विस्मयादिबोधक

5. क. जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई विकार नहीं होता उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता है।

ख. अविकारी शब्दों को चार भागों में विभाजित किया जाता है।

ग. <u>संबंधबोधक अव्यय</u> - संज्ञा या सर्वाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जोड़ते है इनके पीछे किसी-न-किसी परसर्ग की अपेक्षा बनी रहती है।

<u>विस्मयादिबोधक</u> - जो अव्यय शब्द विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि मनोभावों को प्रकट करते है।

<u>पाठ-13(विराम-चिह्न)</u>

1. क. ! ख. ? ग. अल्पविराम

2. क. बच्चा रो रहा है।

ख. तुम कहाँ रहते हो?

ग. शीला के पास पेंसिल रबड़ पुस्तकें तथा एक सुंदर कलम है।

घ. लगातार दौड़ धूप करने पर कार्य बन ही गया!

ड. सप्ताह में सात दिन होते है। सोमवार, मंगलवार , बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार,

च. हाय! मैं तो बरबाद हो गया।

3. क. वाक्य में विभिन्न भावों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहलाता है।

ख. वाक्य समाप्त होने के बाद पूर्णविराम चिह्न का प्रयोग होता है। जहाँ थोड़ा रूकना आवश्यक है, वहाँ अल्पविराम चिह्न का प्रयोग होता है।

ग. जिस वाक्य के द्वारा प्रश्न पूछे जाने का बोध होता है वहाँ प्रश्नावचक चिह्न का प्रयोग होता है।

घ. जहाँ हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय, आदि भाव प्रकट होते है वहाँ विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

पाठ-14(विलोम शब्द)

1. क. अच्छा ख. निर्धन ग. हानि
   घ. अनुपकार ड. ईमानदार

पाठ-15(पर्यायवाची शब्द)

1. क. अमी, अमिय ख. सुरसरि , जाह्नवी
   ग. बाजि , हय घ. विहग , विहंगम
   ड. पयोधि , उदधि च. तरंगिणी , शैवालिगी
   छ. कहरी, मृगेंद्र ज. कुंजर , हस्ति
   झ. पाहुन , आंगतुक ञ. पाणि, कर
2. क. हाथ - पाणि , कर
   ख. स्त्री - नारी , महिला
   ग. सूर्य - रवि , भास्कर
   घ. फूल - पुष्प , कुसम
   ड. पहाड़ - अचल , गरि
   च. कमल - नीरज , सरोज

पाठ-16(अनेक शब्दों के लिए एक शब्द)

1. क. जिस क्षमा न किया जा सके।
   ख. जिसक कोइ शत्रु पैदा ही न हुआ हो।
   ग. जो संभव न हो।
   घ. जिसका कोई अंत न हो।
   ड. अनुकरण करने के योग्य

च. जिसके मन में कपट हो।

2. ख. यह अजर है।

ग. अवर्णनीय है।

घ. वह कपटी है।

पाठ-17(अनेकार्थक शब्द)

1. क. √ ख. √ ग. √

घ. × ड. √ च. ×

2. क. अंक ख. आम ग. गुरू

घ. हरि ड. केश

3. क. आकाश में बादल हैं, रमेश के वस्त्र बहुत अच्छे है।

ख. हमें फल रो खाने चाहिए, सोहन एक साधारण व्यक्ति है।

ग. शिक्षक ही हमें राह दिखाते है, कल भारी बरसात हुई।

घ. दूध में प्रोटीन होता है, हमें सूर्य देव को जल देना चाहिए।

ड. देवता हमारी रक्षा करते है, स्वर की संख्या 11 होती है।

पाठ-18(मुहावरे)

1. क. परेशान करना ख. पराजित होना

ग. डर कर भाग जाना घ. बहुत प्यारा

2. क. मुँह में पानी आ गया।

ख. आँख लग गई।

ग. नाक में दम कर रखा है।

घ. नौ दो ग्यारह हो गये।

ड. फूली ने समायी।

3. क. बना - बनाया काम बिगाड़ देना।

इतना अच्छा खेल चल रहा था राम ने सब गुड-गोबर कर दिया।

ख. बहुत शर्मिंदा होना, चोरी पकड़ी जाने पर राज पानी पानी हो गया।

ग. भारतीय ने स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये। (परास्त करना)

घ. बुरी तरह हरा देना , भारत ने पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिये।

4. क. रमेश ने राजू के आँख में धूल झोंका।

ख. राम के मुँह में पानी आ गया।

ग. राजू बात में नमक मिर्च लगा देता है।

घ. गोलगप्पे को देखकर मुँह में पानी आ गया।

व्याकरण वाटिका (कक्षा-4)

पाठ- 1 (भाषा और व्याकरण)

1. क. लिपि ख. 14 सितंबर को ग. व्याकरण

2. क. सुनकर ख. पढ़कर

ग. वाक्यों घ. शब्दों , वर्णों

3.

	भाषा का नाम	राज्य का नाम
क.	मलयालम	केरल
ख.	असमिया	असम
ग.	बंगला	पश्चिम बंगाल
घ.	हिन्दी	उत्तर प्रदेश
ङ.	कन्नड़	कर्नाटक
च.	तेलुगू	आंध्र प्रदेश

छ. पंजाबी पंजाब

ज. गूजराती गुजरात

झ. उड़िया उड़ीसा

ञ. मराठी मराहाष्ट्र

4. क. अपने मन के भाव बोलकर या लिखकर प्रकट करने का नाम ही भाषा है।

ख. भाषा के दो रूप होते है।

ग. मौखिक भाषा को सुनकर समझा जाता है तथा लिखित भाषा को पढ़कर समझा जाता है।

घ. सांकेतिक भाषा वह भाषा हे, जिसमें किसी चीज को समझाने के लिए विभिन्न प्रकार के हाथों का सहारा, उंगलियों का सहारा, अपने चेहने के हाव-भाव, किस चीज को देखकर समझाना यह सभी सांकेतिक भाषा कहलाता है।

ड. किसी भी भाषा को विस्तार से समझने के लिए व्याकरण को समझना जरूरी है हमें बचपन से ही हिंदी या अंग्रेजी भाषा सिखाई जाती है और इसके व्याकरण
भाग को भी समझाया जाता है। तभी हम शब्द या वाक्य आदि बनाना सिखते है। इसलिए व्याकरण को पढ़ना जरूरी है।

च. हमारे देश की राजभाषा का नाम हिंदी है।

पाठ-2 (वर्ण-विचार)

1. क. व्यंजन ख. दो व्यंजनों से ग. स्पर्श व्यंजन

2. क. किसान - क् + इ + स् + आ + न् + अ

ख. मकान - म् + अ + क् + आ + न् + अ

ग. लड़का - ल् + अ + ड़ + अ + क् + आ

घ. बोतल - ब् + ओ + त् + अ + ल् + अ

3. क. क्ष -पक्ष , रक्षा ख. ज्ञ - ज्ञानी , संज्ञा

ग. त्र - चित्र , पत्र घ. श्रमिक , विश्राम।

4. क. वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके और खंड नहीं किए जा सकते है, वर्ण कहलाती है। ये दो प्रकार के होते हैं

ख. जिन ध्वनियों के उच्चारण में साँस की हवा बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकलती है, उन्हें 'स्वर' कहते है। ये दो प्रकार के होते है।

ग. इन स्वरों के अतिरिक्त निम्नलिखित अन्य स्वर भी हैं, जिन्हें सम्मिलित रूप से अयोगवाह कहा जाता है।

घ. जिन वर्णो का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, वे 'व्यंजन' कहलाते है।

ड. व्यंजन तीन प्रकार के होते है।

पाठ-3 (शब्द विचार)

1. क. जन्म ख. ग. खीर

2. क. देशज ख. विदेशी ग. रूढ घ. विकारी

ड. उत्पत्ति का आधार

3. गाँव चाँद दूध

सच आम कुँवा

पिया हाथ घर

घड़ा खेत गाय

4.

5. क. अंधकार, कर्ण , अश्रु

ख. थाल , तोता , घोड़ा

ग. राष्ट्रपति , सेनापति, शिवालय

घ. अंग्रेजी , अरबी , फारसी

6. क. दो या दो से अधिक वर्णो के सार्थक मेल को शब्द कहते है।

ख. जब कोई शब्द वाक्य में प्रयोग होता है, तो उसे पद कहते है।

ग. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं।

ड. विकारी- जिन शब्दों के रूप में वचन, लिंग, पुरूष तथा काल के कारण कुछ विकार पैदा हो जाते हैं, उन्हें विकारी शब्द कहते है। जैसे संज्ञा, सर्वनाम , विशेषण और क्रिया विकारी शब्द होते है।

अविकारी- जिन शब्दों के रूप में प्रयोग करते समय कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते है।

पाठ-4 (वाक्य-विचार)

1. क. शब्दों से ख. निश्चयवाचक

2. उद्देश्य विधेय

क. तुम्हारे कहाँ रहते है।

ख. हम शिमला जा रहे है।

ग. मेरी माता जी अध्यापिका है।

घ. तुम्हें कार चलानी आती है।

ङ. बालक कितना प्यारा है।

3. क.

ख.

ग.

घ.

ङ.

च.

4. क. क्या आज 15 अगस्त है?

ख. वाह! खाना खा कर मजा आ गया।

ग. शुभम, मन लगाकर पढ़ता है।

घ. माता जी पानी पी रही है।

ङ. क्या तुम आठ बजे तक आ सकते हों?

5. क. सार्थक शब्दों का समूह जो बात का अर्थ पूरी तरह से स्पष्ट करता हो, वाक्य कहलाता है। प्रत्येक वाक्य के दो अंग होते है।

1. उद्देश्य 2. विधेय

ख. वाक्य छः प्रकार के होते है।

क. निश्चयवाचक वाक्य

ख. प्रश्नवाचक वाक्य

ग. निषेधवाचक वाक्य

घ. विस्मयादिबोधक वाक्य

ङ. आज्ञावाचक वाक्य

च. इच्छावाचक वाक्य

पाठ-5 (संज्ञा)

1. क. संज्ञा ख. पाँच ग. जातिवाचक

2. संज्ञा प्रकार

   क. गन्ना द्रव्यवाचक

   ख. शेर भाववाचक

   ग. मीरा भाववाचक

   घ. तुलसीदास व्यक्तिवाचक

   ड. बालक व्यक्तिवाचक

3. क. इंसानियत ख. मिठास ग. चुनाव

   घ. स्वास्थ्य ड. धैर्य।

4. क. किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते है। जैसे- पशु, सुन्दरता, व्यथा आदि।

   ख. संज्ञा के पाँच भेद होते है।

   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा - जैसे - कार , मेज आदि।
   2. जातिवाचक संज्ञा - जैसे - नरेश , सुशील आदि।
   3. भाववाचक संज्ञा - जैसे - ऊँचाई, वीरता आदि।
   4. समुदायवाचक संज्ञा -जैसे - कक्षा , सभा आदि।
   5. द्रव्यवाचक संज्ञा - जैसे - सोना , चाँदी आदि।

ग. जब किसी संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के समूह का बोध होता है तब उसे समूहवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे- कक्षा, सोना , भीड़ आदि।

जिन शब्दों से किसी द्रव्य के नाम का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक कहते है। जैसे - सोना , चाँदी , लोहा।

घ. व्यक्तिवाचक- जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु स्थान आदि का ज्ञान हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है।

जतिवाचक - जिन संज्ञा शब्दों से किसी जाति या वर्ग का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते है।

पाठ-6 (लिंग)

1. क. नेपाल ख. स्त्रीलिंग ग. वर्ता में

2. नौकर- पुल्लिंग मानसरोवर - पुल्लिंग गुलाब - पुल्लिंग
   श्रीमान - पुल्लिंग चंपा - पुल्लिंग लता - स्त्रीलिंग
   चाँदनी- स्त्रीलिंग हिंदी - स्त्रीलिंग सूर्य - पुल्लिंग
   चना- पुल्लिंग हिमालय - पुल्लिंग पृथ्वी - स्त्रीलिंग
   चतुर्थी- स्त्रीलिंग रस्सा - पुल्लिंग लोग - पुल्लिंग

3. बिच्छू सखी
   वीरांगना देवी
   छात्रा चौधरानी
   सुता सेवीका

4. स्वामी कछुआ
   नायक युवक

शिष्य सम्राट

कटार

तपस्वी

चील

5. क. चौबाइन जी बकरी लाई।

ख. दासी रानी की सेवा कर रही थी।

ग. हथिनी ने शेरनी को मार भगाई।

घ. लड़कियाँ भिखारी की हँसी उड़ा रहे थे।

ड. अध्यापिका ने छात्रों को पढ़ाया।

6. क. उपयक्त वाक्यों में रंगीन शब्द दो प्रकार के है। दादा और शेर पुरूष जाति के तथा दादी और शेरनी स्त्री जाति के शब्द है। ऐसे शब्द 'लिंग' कहलाते हैं

ख. लिंग के दो भेद होते है। 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग

पुल्लिंग- 1. देशों के नाम - भारत , नेपाल आदि।

2. दिन, महीनें, और साल के नाम- रविवार, सोमवार, अप्रैल आदि।

स्त्रीलिंग - भाषाओं के नाम - हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू आदि।

पाठ-7 (वचन)

1. क. माँ ख. संबंध प्रकट करने वाले शब्द ग. सभी

2. कमरे कुत्ते

बेटे मशीनें

सभाएँ जातियां

बकरियों ऋतुएँ

गुड़ियॉ बधुएँ

3. साड़ी प्याला

सीमा पगडंडी

चिड़िया संतरा

लू सभा

4. क. ये

ख. आए

ग. गए है।

घ. चले गए।

ड. रहे है।

5. क. बच्चें

ख. लड़कियाँ

ग. स्त्रीयाँ

घ. कुत्ते

ड. लड़के

च. पुस्तकें

6. क. शब्द के जिस रूप से यह बोध हो कि वह संख्या में एक है या अधिक, उसे वचन कहते हैं।

ख. वचन के दो भेद होते है- 1. एक वचन 2. बहुवचन।

पाठ-8 (कारक)

1. क. आठ ख. के लिए ग. परसर्ग

2. क. × ख. × ग. √ घ. √ ड. √

3. क. कर्म कारक ख. अपादान कारक ग. अधिकरण कारक

   घ. संबंध कारक ड. संबोधन कारक

4. क. छवि ने पुस्तक पढ़ी है।

   ख. मरीज के लिए दवाई लेना है।

   ग. कमला स्कूटर से गिर गई।

   घ. डाल पर पक्षी बैठी हुई है।

   ड. यह रवि का घर है।

5. क. वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का उस वाक्य की क्रिया से जो संगंध होता है, उसे कारक कहते है। ये आठ प्रकार के होते है।

   ख. जिन शब्दों से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उन्हें कर्ता कारक कहते हैं, जैसे- छवि ने पुस्तक पढ़ी, राजन मेरठ जाएगा।

   ग. करण कारक - जिन शब्दों से क्रिया के साधन का बोध करा रहे है। अतः ये करण कारक है। यहाँ 'से' और ' के द्वारा' का कारक चिह्न है।

   अपादान कारक- जिससे किसी वस्तु अथवा प्राणी के अलग होने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते है।

   घ. जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के क्रिया का आधार प्रकट होता है, उसे अधिकरण कारक कहते है, जैसे- टोकरी में फल है। डाल पर मोर है।

   ड. कारक- चिह्न

      1. कर्ता - ने

      2. कर्म - को

3. करण - से

4. संप्रदान- को, के लिए

5. अपादान- से (अलग होना)

6. संबंध - का , की, के, रा, री , रे

7. अधिकरण - में, पर

8. संबोधन - हे, अरे।

पाठ-9 (सर्वनाम)

1. क. प्रश्नवाचक ख. अनिश्चयवाचक ग. निजवाचक
   घ. अनिश्चयवाचक ड. प्रश्नवाचक
2. क. शेर ख. राजा ग. फिर
   घ. नही ड. हाँ
3. क. उन्होंने नाश्ता किया।
   ख. ये हमारे कपड़े है।
   ग. जल्दी से किसी को बुलाओ।
   घ. तुमने वहाँ किसकी बात की।
4. क. वह ख. आप ग. तुम घ. स्वयं
   ड. जो, वह
5. क. मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।

ख. उसको जाने दो।

ग. आप कौन है।

घ. मैं खुद कर लूँगी।

6. क. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं

ख. सर्वनाम के छह भेद होते हैः-

1. पुरूषवाचक 2. निश्चयवाचक 3. अनिश्चयवाचक

4. प्रश्नवाचक 5. संबंधवाचक 6. निजवाचक

ग. निश्चयवाचक सर्वनाम - जो सर्वनाम शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में निश्चित जानकारी दें, उन्हें निश्चवाचक सर्वनाम कहते है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम - ऐसे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की जानकारी नहीं कराते, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

घ. ऐसे सर्वनाम शब्द हो प्रश्न पूछने के काम आते है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है।

ड. वे सर्वनाम शब्द जो वाक्य में आने वाले दूसरे सर्वनाम शब्दों से जुड़े होते है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते है।

पाठ-10 (विशेषण)

1. क. विशेषण ख. विशेष्य ग. पाँच

2. क. कच्चे ख. बड़ा ग. काली

घ. बंगाली ड. पाँच

3. क. यह भारत का उत्तरी क्षेत्र है।

ख. श्याम दयालु है।

ग. वह बहुत निर्दयी है।

घ. मुझे दो किलो चीनी दे दिजिये।

ड. श्वेता का मासिक वेतन दस हजार है।

4. क. परिमाणवाचक विशेषण

ख. गुणवाचक विशेषण

ग. व्यक्तिवाचक विशेषण

घ. गुणवाचक विशेषण

ड. संख्यावाचक विशेषण

5. क. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते है।

ख. विशेषण जिन संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है, उन्हें विशेष्य कहते है।

ग. विशेषण पाँच प्रकार के होते है।

1. गुणवचक विशेषण 2. परिमाणवाचक विशेषण 3. संख्यावाचक विशेषण
4. संकेतवाचक विशेषण 5. व्यक्तिवाचक विशेषण

घ. कुछ विशेषणों की रचना संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया में उपसर्ग या प्रत्यय जोड़कर की जाती हैं ऐसे विशेषणों को मौखिक विशेषण कहा जाता है।

ड. इस प्रकार हम कह सकते है कि विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती है।

1. मूलावस्था 2. उत्तरावस्था 3. उत्तमावस्था

पाठ-11 (क्रिया)

1. क. क्रिया ख. दो ग. सकर्मक क्रिया में

2. कर्म क्रिया

क. वन चले गए।

ख. जयपुर जा रहा है।

ग. आम खाती है।

घ. बीज बो रहा है।

ड. फूल तोड़ रहा है।

3. क. राम पुस्तक पढ़ रहे है।

ख. मैं इलाहाबाद जा रहा हूँ।

ग. पिताजी आज दिल्ली से आऐंगे।

घ. माँ ने पिंकी को दही खिलाई।

ड. सोनिया ने गीत और कविता गाई।

4. क. जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है।

ख. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते है।

ग. सकर्मक क्रिया- जिन क्रियाओं का कर्म होता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते है। इन क्रियाओं वाले वाक्यों में क्या, किसको लगाकर प्रश्न करने पर उत्तर मिल जाता है।

उदाहरण - बंसी खिलौने बेच रहा है।

प्रश्न- बंसी क्या बेच रहा है?

उत्तर- खिलौने

बंसी- कर्ता

खिलौने - कर्म

बेच रहा है - क्रिया

अकर्मक क्रिया - जिन क्रियाओं का कर्म नहीं होता है, उन्हें कर्मक क्रिया कहते है। इन क्रियाओं का फल सीधे कर्ता पर पड़ता है। इन क्रियाओं वाले वाक्यों में क्या प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता बल्कि कौन प्रश्न का उत्तर मिलता है।

उदाहरण – घोड़ा दौड़ रहा है।

प्रश्न – कौन दौड़ रहा है?

उत्तर– घोड़ा।

घोड़ा – कर्ता

दौड़ रहा है – क्रिया।

पाठ–12 (काल)

1. क. क्रिया के समय का ख. बीता हुआ समय ग. आने वाला समय

2. क. वर्तमान काल ख. वर्तमान काल ग. भविष्यत् काल
   घ. भूतकाल ङ. वर्तमान काल च. भविष्यत् काल
   छ. भूतकाल ज. भविष्यत् काल झ. भूतकाल

3. क. जा चुका हैं
   ख. जाएँगे।
   ग. पढ़ी थी
   घ. बना रही है।
   ङ. खेलूँगा।

4. क. जिस शब्द से क्रिया के होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते है।
   ख. काल तीन प्रकार के होते है।
   1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल

पाठ–12 (अव्यय)

1. क. अव्यय ख. क्रियाविशेषण ग. समुच्चयबोधक शब्द

2. क. बहुत ख. अच्छा ग. उधर

   घ. बाहर ड. अचानक।

3. क. तुम अंदर जाओ।

   ख. पीछे मुड़कर देखा तो एकदम से खिलखिलाकर हँस पड़ा।

   ग. सबकों ज्ञान बराबर मिलता है।

   घ. धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।

   ड. वह तैरने में बहुत तेज है।

4. क. प्रसन्नता ख. आश्चर्य ग. घृणा

   घ. दुःख ड. आश्चर्य

5. क. इसलिए ख. क्योंकि ग. बल्कि

   घ. कि ड. किंतु

6. क. के पास ख. के बिना ग. के साथ

   घ. के ऊपर ड. के अंदर

7. क. वाक्य में प्रयोग करने पर कुछ शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। ऐसे शब्द अव्यय कहलाते है।

   ख. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते है, उन्हें क्रियाविशेषण कहते है। जैसे - चीता तेज दौड़ता है, मैं आज आऊँगा।

   ग. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से बताते है, उन्हें संबंधबोधक कहते है।

   जैसे- नमिता का भाई आया है।

रमन स्कूटर पर जा रहा था।

घ. अरे! कितना ऊँचा पेड़ है यह?

वाह! उसी तरह उन्नति करते रहो।

छिः! कितना गंदा कपड़ा है।

थू! कितना कड़वा स्वाद है।

पाठ-14 (शब्द-भंडार)

1. क. अनुचति ख. व्यय ग. सुपुत्र घ. नकद

2. सर, सरोवर, तड़ाग।

शंकर, महोदव, शंभु।

भागीरथी, देवायगा, सुरसरि।

गिरिवर गिरिराज, पर्वतराज

3.

	शब्द	विलोम
क.	अनाथ	दुर्गंध
ख.	आदर	गुलाम
ग.	उचित	सनाथ
घ.	उधार	अनादर
ड.	सुगंध	नकद
च.	आजाद	अनुचित

4. क. वार्षिक

ख. आस्तिक

ग. भाग्यशाली

घ. मांसाहारी

पाठ-15 (मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ)

1. क. आँख में धूल झोंकना - (धोखा देना) - रमेश ने सुरेश के आँखों में धूल झोंककर उसके सभी कागजात अपने नाम कर लिए।

ख. घाव हरा होना - (भूला हुआ दुःख याद आना) - अपने स्वर्गीय पति का नाम सुनते ही उसका घाव हरा हो गया।

ग. दिल से उतरना - (प्रिय पात्र न रहना)- जब से उसने मुझे धोखा दिया है, वह मेरे दिल से उतर गया हैं

घ. पापड़ बेलना - (कठिनाईयों से जूझना)- सारी उम्र पापड़ बेलते बीत गई, पर एक दिन भी सुख नहीं मिला।

ड. नानी याद आना - (अत्याधिक परेशान होना) क्रोध आने पर वह ऐसे चीखने-चिल्लाने लगता है कि आसपास के लोगों की नानी याद आ जाती हैं।

2. क. अधजल गगरी छलकत जाय- (ओछा आदमी इतराता है) - थोड़ा- सा पैसा आ जाने पर वह कितना बदल गया? किसी ने ठीक ही कहा है- अंधजल गगरी छलकट जाय।

ख. ऊँची दुकान फीका पकवान- (बाहरी दिखावा)- दिनेश के कपड़ों की चमक-दमक देखकर उसे धनी समझने की भूल मत कर बैठना। यहाँ तो ऊँची दुकान फीका पकवान है।

ग. आगे कुआँ पीछे खाई - (दोनों ओर मुसीबत) - अगर भाई साहब की बात नही मानता तो वे मारेंगे, अगर मानता हूँ तो पिताजी डाँटेगें। मेरे तो आगे कुआँ, पीछे खाई है।

घ. होनहार बिखान के होते चिकने पात - (होनहार के लक्षण पहले ही प्रकट हो जाते है)- माधव का बेटा आठ साल का है पर अभी से अनोखे कारनामें कर दिखाता है। किसी ने ठीक ही कहा है- होनहार बिखान के होते चिकने पात।

पाठ-16 (विराम-चिह्न)

1. क. ? ख. , ग. !

2.

अ	ब
क. पूर्णविराम	?
ख. प्रश्नवाचक चिह्नह	-
ग. योजक	।
घ. अल्पविराम	-
ड. विस्मयादिबोधक चिह्न	,
च. विवरण चिह्न	!

3. क. रीना, गीता और प्रिया कक्षा तीन में पढ़ती है।

ख. बैठे- बैठे राम-राम ही भज लिया करो।

ग. अब कहाँ जाओगे?

घ. अरे! तुम तो चूहे से डर गए।

ड. अशोक नाम का एक राजा था।

4. क. कथन का आशय समझाने तथा लिखते समय रुकने का संकेत देने के लिए जिन चिह्नों का प्रयास किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

ख. विराम- चिह्नों का प्रयोग अत्यावश्यक है, गलत स्थान पर लगे विराम-चिह्न से वाक्य का अर्थ बदल जाता हैं

ग. 1. पूर्णविराम- सामान्य आदेशात्मक या निषेधात्मक वाक्य के अंत में पूर्ण विराम (।) लगाया जाता है, यह वाक्य की समाप्ति का सूचक होता है।

2. अल्पविराम- वाक्य में कथन को स्पष्ट करते हुए जहाँ थोड़ा रुकना होता है, वहाँ अल्प विराम (,) लगाया जाता है।

3. प्रश्नवाचक चिह्न- जिस वाक्य में प्रश्न पूछा जउसके अंत में प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगाया जाता हैं।

4. विस्मयादिबोधक चिह्न - इस चिह्न द्वारा हर्ष, शोक, आश्चर्य आदि भावों को व्यक्ति किया जाता है।

हिन्दी व्याकरण वाटिका - कक्षा -5

पाठ-1 (भाषा और व्याकरण)

1. क. भाषा ख. मातृभाषा ग. व्याकरण

2. क. √ ख. √ ग. √
   घ. √ ड. √

3. क. भाषा ख. लिपि ग. तेलुगू
   घ. गुरुमुखी ड. व्याकरण

4. क. तुमसे मैं मिलूँगा।
   ख. पेड़ से आम गिर गया।
   ग. बकरी घास खा रही है।
   घ. मेज पर पुस्तक रखी है।
   ड. शुभ प्रभात हो गया। सूर्य निकल आए।

5. क. अपने मन के भावों और विचारों को प्रकट करने के लिए हम जिस साधन का प्रयोग करते है, उसे भाषा कहते है।

ख. जब दोनों लोग आपस में बोलकर और सुनकर अपने मन के भाव और विचार प्रकट कर रहे हों, उसे मौखिक भाषा कहते है- जैसे - आयुष - कैसी हो दीपा?

दीपा - ठीक हूँ, तुम कैसे हो आयुष?

जब कोई अपनी बात बोलने में हिचकिचाहट या कोई दूर हो उसे हम लिखकर अपनी मन की बात प्रकट करते हैं, उसे भाषा का लिखित रूप कहते है।

जैसे - अर्पिता ने अपने दादा जी को पत्र लिखकर अपने मन की बात प्रकट की।

ग. प्रत्येक भाषा के शब्दों और वाक्यों के सही बोलने, पढ़ने और लिखने के कुछ नियम होते है। व्याकरण इन नियमों का ही ज्ञान कराता है। इन नियमों का पालन करके हम भाषा का शुद्ध रूप में प्रयोग कर सकते है।

घ. भाषा की ध्वनियों को लिखने के लिए कुछ चिह्न बना लिए जाते है, ये चिह्न लिपि कहलाते है।

भाषा	लिपि
हिंदी	देवनागरी
संस्कृत	देवनागरी

पाठ-2 (वर्ण-विचार)

1. क. वर्णमाला ख. सभी ग. 'ह्' के समान
2. क. अनुस्वार (ं) - गंगा, पंजाब , फंदा
   ख. अनुनासिक (ँ) - चाँद, आँख, माँ
   ग. विर्सग (:) - प्रातः , नमः, पुनः।
3. क. क् + य- क्य - वाक्य, क्यारी
   ख. द् + य - द्य - विद्या , विद्यालय
   ग. स् + त - स्त - सस्ता , बस्ता
   घ. क् + त - क्त - वक्त , व्यक्ति

4. क. न्न - अन्न , उत्पन्न

ख. त्त - कुत्ता , पत्ता

ग. ध - धर्म , धय

घ. म्म - मम्मी , चम्मच

ड. च्च - बच्चा , कच्चा

च. क्क - पक्का , चक्का

5. क. विश्वास - व् + इ + श् + व् + आ + स् + अ

ख. पहचान - प् + अ + ह् + अ + च् + आ + न् + अ

ग. विशेषता - व् + इ + श् + ए + ष् + अ + त् + आ

घ. व्यवहार - व् + य् + अ + व् + अ + ह् + आ + र + अ

6. आधार कमाल लड़का

आकाश घड़ा लेकिन

इलाज चार स्थान

ईमान पहचान हमेशा

ऊन पराग

कबूतर मार्मिक

7. क. मुँह से निकलने वाली ध्वनि जिसके और अधिक खंड नहीं हो सकते , उसके लिए निश्चित चिह्न वर्ण कहते है।

ख. वर्णो के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

ग. वर्णो को तीन भागों में बाँटा गया है।

घ. स्वरों के चिह्न निश्चित हैं। इन चिह्नों को मात्रा कहते हैं। व्यंजनों को बोलने में और शब्द बनाने में मात्राओं का प्रयेग किया जाता है।

पाठ-3 (शब्द विचार)

1. क. वर्णों से ख. पर्यायवाची शब्द ग. तत्सम शब्द

2. क. तत्सम शब्द - 'तत्सम' का अर्थ है उस (संस्कृत) के समान अर्थात संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों - के - त्यों प्रयुक्त होते है, वे तत्सम शब्द कहलाते है। ये शब्द बिना किसी परिवर्तन के व्यवहार में प्रयोग किए जाते है। जैसे - तरुण , पुस्तक, अग्नि आदि।

   ख. देशज - हिंदी में प्रचलित वे शब्द जो देश की विभिन्न बोलियों द्वारा हिंदी भाषा में स्थान पा गए हैं, वे देशज शब्द कहलाते है। जैसे - भिंडी, किलकारी, मिर्च आदि।

   विदेशी शब्द- जो शब्द संसार की विभिन्न भाषाओं से हिन्दी भाषा में आ गए है तथा हिंदी भाषा ने थोड़ा - बहुत परिवर्तन के साथ उन्हें अपना लिा है, वे आगत शब्द विदेशी शब्द कहलाते है, जैसे - अंग्रेजी , अरबी शब्द आदि।

   ग. रूढ़ शब्द - ऐसे प्रचलित शब्द जिनका खंड करने पर उन खंडों का कोई अर्थ न निकले, वे रूढ़ शब्द कहलाते है। जैसे - जल - ज + ल , रोटी - रो + टी

   घ. विकारी शब्द- जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक और काल के कारण परिवर्तन या विकार आ जाता हैं, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं, जैसे - लड़का पढ़ता है, लड़की पढ़ती है आदि।

   अविकारी शब्द - वाक्य में प्रयोग करते समय जिन शब्दों के रूप में किसी कारण विकार या परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते है। जैसे - लड़का तेज दौड़ा, वह आज आएगा।

3. क. यौगिक शब्द - रसोई + घर - रसोईघर
   सेना + पति - सेनापति
   कमाना + आई - कमाई

   ख. योगरूढ़ शब्द - लंब + उदर - लंबोदार

दश + आनन - दशानन

नील + कंठ - नीलकंठ

ग. अनेकार्थी शब्द - उत्तर , गुरू , फल

घ. विदेशी शब्द - अंग्रेजी , अरबी , तुर्की।

ड. संकर शब्द - घंड़ी + साज - घंड़ीसाज

चाल + बाज - चालबाज

राज + महल - राजमहल

4. ऊँचा - उच्च आठ - अष्ट

घोड़ा - घोटक कबूतर - कपोत

चमड़ा - चर्म चार - चतुर्थ

5. गृह - घर नासिका - नाक

भ्राता - भाई रात्रि - रात

हास्य - हँसी श्रावण - सावन

6. क. एक या एक से अधिक वर्णो के मेल से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक इकाई शब्द कहलाती है। धन, खाना, खिला, फीस, घर, चिंता , शंख, अंग, चंदन।

ख. पद हिंदी व्याकरण का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है, अर्थात् शब्द का ही दूसरा अंग पद होता है या हम यह भी कह सकते है जब कोई सार्थक शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता हे, उसे पद कहते है।

जब शब्द किसी वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तो वह शब्द 'पद' बन जाता है। परंतु जब शब्द किसी वाकय का अंग नही होता स्वतंत्र होता है, वह शब्द कहलाता हैं

ग. शब्दों को आठ भागों में बाँटा गया है।

1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया

5. क्रिया- विशेषण 6. संबंध बोधक 7. समुच्चय बोधक 8. विस्मयादि बोधक।

घ. उत्तपति के आधार पर शब्द के चार भेद होते है- तत्सम , तद्भव, देशज तथा विदेशी।

ड. शब्दों में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण विकार अर्थात् परिवर्तन आ जाता है वे शब्द विकारी शब्द कहलाते है।

व कार्क के आधार पर उनमें किसी तरह का परिवर्तन नहीं होता अर्थात् जो शब्द हमेशा एक-से रहते हैं, वे अविकारी शब्द कहलाते है।

च. अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते है-

1. सार्थक - जिस वर्ण समूह का स्पष्ट रूप से कोई अर्थ, निकले, उसे सार्थक शब्द कहते है - जैसे - लड़का , पेड़ गरीब आदि।
2. निरभर्क शब्द - जो शब्द स्वतंत्र रूप से किसी अर्थ का बोध नहीं कराते, उनको निरर्थक शब्द कहते है। जैसे - वाय, वोटी, वानी आदि।

पाठ-4 (वाक्य-विचार)

1.	क.	उद्देश्य	ख.	तीन	ग. संयुक्त वाक्य	
2.		उद्देश्य		विधेय		
	क.	माता जी		रामायण पढ़ती है।		
	ख.	वे		कबड्डी खेल रहें है।		
	ग.	पक्षी		उड़ रही है।		
	घ.	लड़कियाँ		नदी में नहा रही है।		
	ड.	मनीष		कहानी लिख रहा है।		
3.	क.	वाक्य	ख.	उद्देश्य	ग.	विधेय
	घ.	विधेय	ड.	प्रश्नसूचक।		
4.	क.	मैं प्रतिदिन स्कूल नहीं जाता हूँ।				

ख. क्या रमेश टी0वी0 देख रहा है?

ग. हम खाना खाएँगे।

घ. वह सो रही है।

ङ. शायद वर्षा हो रही है।

5. क. नकारात्मक वाक्य

ख. प्रश्नवाचक वाक्य

ग. इच्छाबोधक वाक्य

घ. विस्मयबोधक वाक्य

ङ. सकारात्मक वाक्य

6. क. दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

ख. वाक्य के दो अंग होते है।

1. उद्देश्य 2. विधेय।

ग. रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते है-

1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्रित वाक्य।

घ. जिस वाक्य में प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे - क्या तुम घर जाते हो, संगीता कहाँ रहती है? आदि।

ङ. जिस वाक्य से किसी की इच्छा, आशीर्वाद, या शुभकामना का बोध हो, उसे इच्छाबोधक वाक्य कहते है।

जैसे - आपकी यात्रा सुख हो।

ईश्वर आपका कल्याण करें। यादि।

पाठ-5 (संज्ञा और उसके भेद)

1. क. सभी के नाम को ख. भाववाचक ग. सोना

2. क. भारत , गंगा , कुतुबमीनार , दिल्ली।

ख. पुरुष , स्त्री , नगर , नदी।

ग. बुढ़ापा , हँसी , वीरता , मोटापा।

घ. भीड़ , कक्षा , सभा , सेना।

ड. कोयला , सोना , लोहा, लकड़ी।

3. चाल - चाल कठिन - कठिनाई

माता - मातृत्व पराया - परायापन

दूर - दूरी मधुर - मुधरता

कोमल - कोमलता चौड़ा - चौड़ाई

निज - निजत्व

4. क. √ ख. × ग. √ घ. × ड. √

5. भाई पीना

शीघ्र अहंकारी

पराया मित्र

वकील मुर्ख

चालाक

पाठ-6 (लिंग)

1. क. पुरुष जाति का ख. सभी ग. सभी।

2. क. इन - धोबिन , मालिन , लुहारिन , नागिन।

   ख. इका - गायिका, नायिका , अध्यापिका , बालिका।

   ग. इनी - स्वामिनी, अभिमानिनी , हंसिनी , हथिनी।

   घ. वती - भगवती , गुणवती , रूपवती , ज्ञानवती।

   ड. आइन - ठकुराइन , बबुआइन , पंडाइन , चौबाइन।

   च. आनी - देवरानी , सेठानी , जेठानी , नौकरानी।

3. | | | | |
   |---|---|---|---|
   | लाला - | लालइन | मोर - मोरनी | तपस्वी - तपस्विनी |
   | नायक - | नायिका | नेता - नेत्री | हाथी - हथिनी |
   | छात्र - | छात्रा | माली - मालिन | ऊँट - ऊँटनी |
   | रूपवान - | रूपवती | मामा - मामी | चोर - चोरनी |
   | ठाकुर - | ठाकुराइन | लेखक - लेखिका | कहार - कहारिन |

4. क. बालिका के पास एक हंस था।

   ख. गायक का गीत सुनकर राजा प्रसन्न हुआ।

   ग. मधु एक अमीर लड़का है।

   घ. सेठानी ने नौकर ने पुरस्कार दिया।

   ड. अध्यापक का पेंसिल खो गया है।

5. क. शब्द के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते है।

   ख. लिंग के दो भेद होते है-

   1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

   ग. पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कुछ नियम निम्नलिखित हैः-

1. कुछ शब्दों में 'आ' (ा) जोड़ने से –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
छात्र	छात्रा
शिष्य	शिष्या
अध्यक्ष	अध्यक्षा
प्रिय	प्रिया

2. कुछ शब्द में 'इन' जोड़ने से –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
धोबी	धोबिन
माली	मालिन
लुहार	लुहारिन
नाग	नागिन

3. कुछ शब्दों में 'आ ' (ा) का 'ई' (ी) करने से –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
लड़का	लड़की
बकरा	बकरी
बेटा	बेटी
दाद	दादी

घ. ऐसे शब्दों को नित्य पुल्लिंग या नित्य स्त्रीलिंग कहते है- जैसे- मच्छर , गैंड़ा , भालू, कौआ, गीदड़, जेबरा, जिराफ, खरगोश, तोता , कछुआ , भेड़िया आदि।
जैसे - मक्खी, मछली , लोमड़ी , भेड़, कोयल , गिलहरी , चिड़िया, मकड़ी, चील आदि।

पाठ-7 (वचन)

1. क. वचन ख. ए में ग. नदियाँ।
2. क. नदियाँ ख. सड़क ग. कविता
   घ. साड़ी ड. कमरे
3. क. लड़का - लड़के छाते - छाता
   सड़क - सड़के शाखाएँ - शाखा
   झाड़ी - झाड़ियाँ वस्तुएँ - वस्तु
   चुहिया - चुहियाँ लता - लताएँ
4. एकवचन बहुवचन
   पंखा नहरे
   कविता नदियाँ
   रात ऋतुएँ
   वस्तु गुड़ियाँ।
5. क. राम ने पुस्तकें खरीदी।
   ख. वृक्ष की शाखा हिल रही है।
   ग. घोड़ें दौड़ रहें है।
   घ. लड़की बाजार जाती है।
   ड. मेरे पास अनेक घड़िया है।
   च. वह छाते लेकर चलते है।
   छ. यह छड़ियाँ अच्छी है।
   ज. नर्तकियों नाच रही है।
   झ. बच्चें क्यों रो रहे है।
   ञ. उनके गायें खूब दूध देती है।

6. स्वयं करे।

7. क. संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को वचन कहते है।

ख. वचन के दो भेद होते हैः-

1. एकवचन 2. बहुवचन

ग. संज्ञा या सर्वनाम की एक संख्या का बोध कराने वाले शब्द को एकवचन कहतें है।

जैसे - छाता , पुस्तक , लड़का , खिलौना आदि।

घ. संज्ञा या सर्वनाम की एक से धिक संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को बहुवन कहते है।

जैसे - छाते , पुस्तकें , लड़के , खिलौने आदि।

पाठ-8 (कारक)

1. क. का ख. से ग. से

2. क. में , अधिकरण

ख. ने , कर्ता

ग. से , अपादान

घ. से , करण

ड. के , संबंध

3. क. में

ख. पर

ग. ने

घ. का

4. क. की - ताले की चाबी खो गई।

ख. में - मैं घर में हूँ।

ग. से - तुम सबसे मेहनतीय लड़कें हो।

5. होली का त्योहार आया। सब ने मिलकर आपस में रंग लगाया। चाचा जी सबके के लिए मिठाई लाए। मैंने फूलों का रस से रंग बनाया।

6. क. वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम पंदों का क्रिया के साथ संबंध बताने वाले शब्द कारक कहलाते है।

जैसे - राम ने पत्र लिखा , पानी में मछली रहती है, आदि।

ख. कारक के आठ भेद होते है-

1. कर्ता कारक 2. कर्म कारक 3. करण कारक

4. संपद्दान कारक 5. अपादा कारक 6. अधिकरण कारक

7. संबंध कारक 8. संबोधन कारक।

पाठ-9(सर्वनाम)

1. क. संज्ञा के स्थान पर ख. सर्वनाम ग. मैं

2. क. मैं ख. कुछ ग. यह

घ. आप ड. स्वयं

3.

	सर्वनाम	भेद
क.	हम	पुरूषवाचक
ख.	वह	पुरूषवाचक
ग.	कोई	अनिश्चयवाचक
घ.	जैसी	संबंध वाचक
ड.	कौन	प्रश्नवाचक

4. क. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते है।

ख. सर्वनाम के छह भेद होते है।

1. पुरूषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनश्चियवाचक सर्वनाम

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम 5. संबंधवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम

ग. पुरूषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैः-

1. उत्तम पुरूष 2. मध्यम पुरूष 3. अन्य पुरूष।

घ. प्रश्न पूछने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है।

ड. किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

पाठ-10 (विशेषण)

1. क. रोटी ख. कपड़ा ग. रंग घ. इमारत

2. ऊँचा , बड़ी।

उत्तम , शानदार

अच्छि कहानी , भयानक कहानी

सुन्दर , सुशील

3. क. काला ख. बूढ़ें ग. साफ घ. मोटा

4. लाल भला

गरीब बच्चा

अच्छा बुढ़ा

समाजिक सप्ताहिक

शहरी देशी

5. लाल - उनके खेत में लाल लाल टमाटर है।

सुंदर - शिल्पी बहुत सुन्दर है।

एक लीटर - मुझे एक लीटर दूध चाहिए।

तीन लीटर - कल हमारे घर में मेहमान आने वाले हैं इसलिए तुम मार्केट से तीन लीटर कॉलड्रींक लेके आओ।

6. क. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते है।

ख. जिन संज्ञा शब्दों की विशेषता बताई जाती हैं, वे विशेष्य कहलाते हैं। जैसे- कुरता , फल, लड़के आदि।

ग. परिमाणवाचक विशेषण- संज्ञा शब्दों की माप या तोल के बारे में बताने वाले शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते है।

संख्यावाचक विशेषण - संज्ञा शब्दों की संख्या के बारे में बताने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते है।

पाठ-11 (क्रिया)

1. क. धातु ख. सकर्मक क्रिया ग. प्रेरणार्थक क्रिया

2. क. सकर्मक क्रिया ख. अकर्मक क्रिया

ग. सकर्मक क्रिया घ. अकर्मक क्रिया

ड. सकर्मक क्रिया

3. क. पत्र ख. फुटबॉल ग. फल

घ. बाजार ड. मिठाई

4. क. बुन रही है।

ख. रो रही है।

ग. पी रहे हो ?

घ. ऊँचाई से कुद रही है।

ङ. चलना है।

5. क. किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते है।

ख. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते है।

ग. क्रिया के दो भेद होते हैः-

1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया

घ. जिस क्रिया के साथ कर्म होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है।

ङ. जब वाक्य में दो कर्म होते है, तो उस क्रिया को द्विकर्मक क्रिया कहते है।

पाठ-12 (काल)

1. क. भूतकाल ख. ता हैं ग. भविष्यत् काल

2. क. भूतकाल ख. वर्तमान काल ग. भविष्यत् काल

घ. वर्तमान काल ङ. भूतकाल

3. क. गाना गाती है।

ग. खाना खा रहे है।

ङ. हिरन झील पर पानी पी रहा है।

4. क. कपिल पुस्तक पढ़ रहा है।

ख. दृश्या पुस्तक पढ़ने जाएँगी।

ग. नेहा नृत्य कर रही थी।

घ. पिताजी बाजार जा रहें है।

ङ. मैं अपने लिए ड्रेस खरीदने जाऊँगा।

5. क. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते है।

ख. काल के तीन भेद होते हैः-

1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल

उदाहरण –

1. भूतकाल– इसमें बीतें हुए समय की बात की जाति है। क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं।

   जैसे – महेश गा रहा था।

2. वर्तमान काल– इसमें आज के समय की बात होती है। क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते है।

3. भविष्यत् काल – इसमें आने वाले समय की बात होती है। क्रिया के जिस रूप से कार्य के आने वाले समय में होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते है।

   जैसे – शिखा विद्यालय जाएगी।

<u>पाठ–13 (अविकारी शब्द) (क्रियाविशेषण)</u>

1. क. अविकारों शब्दों में ख. चार प्रकार के ग. विशेषता
2. क. प्रतिदिन ख. सुबह ग. तेज घ. ऊपर ड. पर थोड़ा
3. क. परसो – कालवाचक क्रियाविशेषण

   ख. बहुत – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

   ग. इधर–उधर – स्थानवाचक क्रियाविशेषण

   घ. जल्दी–जल्दी –रीतिवाचक क्रियाविशेषण

   ड. हमेशा – आवृत्ति क्रियाविशेषण
4. क. जिन शब्दों में लिंग, वचन , कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अव्यय शब्द कहते हैं।

   ख. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते है। जैसे – तेज, दोड़ना , धीरे–धीरे , प्रतिदिन आदि।

<u>(संबंध बोधक)</u>

1. क. संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों से

ख. के बाहर

2. क. के पीछे

ख. के बिना

ग. के भीतर

घ. के साथ

ड. की तरफ

3. क के नीचे

ख. के ऊपर

ग. के ऊपर

घ. के सामने

ड. के बाहर

4. क. जिन शब्दों के द्वारा संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध स्पष्ट हों, संबंधबोधक अव्यय कहलाते है।

ख. संबंधबोधक वाले चार वाक्यः-

1. घर के पास नीम का पेड़ है।
2. राष्ट्रपति भवन के सामने उद्यान है।
3. अखबार के नीचे रूपये रखे है।
4. रमेश और दिनेश का घर सामने-सामने है।

(समुच्चयबोधक)

1. क. दो शब्दों को दो ख. इसलिए

2. क. ताकि ख. और ग. इसलिए घ. पर ड. अथवा

3. क. वह पढ़ा नहीं इसलिए फेल हो गया।

ख. मुझे कल विद्यालय जाना है मगर आज मुझे बुखार आ गया।

ग. व्यक्ति को परिश्रमी ही नहीं बल्कि इमानदार भी होना चाहिए।

घ. रवि मोटा है पर तेज दौड़ता है।

4. जो शब्द दो शब्दों अथवा दो वाक्यों को परस्पर जोड़ने का कार्य करते हैं, उसे समुच्चयबोधक कहलाते है।

विस्मयादिबोधक

1. क. विस्मयादिबोधक ख. !

2. क. हे भगवान ! ख. वाह ! ग. सावधान !

   घ. बाप रे ! छ. छिः !

3. क. बाप रे ! इतना बड़ा साँप ।

   ख. हाय राम ! ये क्या हो गया ।

   ग. शाबाश ! तुमने तो कमाल कर दिया ।

   घ. अरे ! ये तुम क्या कर रहे हो?

   ड. वाह ! कितनो सुंदर फूल है ।

4. क. जो शब्द आश्चर्य, खुशी , दुःख आदि मन के भावों का बोध कराते हैं, विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते है।

   ख. विस्मयादिबोधक शब्द वाले पाँच वाक्यः-

   1. काश ! मैं खूब पढ़ाई कर पाता।
   2. ओह ! मैं अपना पर्स घर पर भूल आया।
   3. खामोश ! प्रधानाध्यापक आ रहे है।
   4. आह ! उसका दुःख देखा नही जाता ।
   5. हे भगवान ! हमारी रक्षा करो।

पाठ-14 (विराम-चिह्न)

1. क. ; ख " " ग. ( )

2. ; → अद्‌र्धविराम चिह्न ? → प्रश्नवाचक चिह्न

: → विस्मयसूचक चिह्न . → लाघव चिह्न

3. क. अरे ! तुम कब आए ?

ख. वाह! क्या सुंदर दृश्य है।

ग. हर्षवर्धन कौन था, वह कहाँ का राजा था?

घ. सफलता के लिए दिन रात मेहनत करो।

ड. राम, श्याम, और दिनेश कहाँ है?

4. ईद को ईद-उल-फितर , भी कहते है। फितर का अर्थ है - दान। ईद पर मुस्लिम लोग गरीबों को दान देते है। ईद भाई- चारे, प्रेम और सद्‌भाव का त्योहार है। यह त्योहार रमजान महीने के अंत में मनाया जाता है। मास के अंत में चाँद देखकर अगले दिन ईद मनाने की घोषणा की जाती है। सब लोग मिल-जुलकर ईदगाह में नमाज पढ़ते हैं, घरों में पकवान बनते हैं, बच्चे -बड़े सभी नए-नए कपड़े पहनते है। नमाज के बाद लोग गले मिलते है। ईद की मुबारकबाद देते हैं। ईद प्रेम, सद्‌भावना और मेल-मिलाप का त्योहार है।

5. क. लिखते समय बात को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग विराम के रूप में किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न करते है।

ख. हर्ष, शोक , घृणा, आश्चर्य, भय आदि को प्रकट करने के लिए विस्मयसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है-

जैसे - अहा ! आनंद आ गया।

हाय! पैर में काँटा चुभ गया।

ग. युग्म (जोड़े) शब्दों को जोड़ने के लिए, तुलना करने वाले शब्द के साथ तथा किसी शब्द की आवृत्ति होने पर योजक चिह्न(-) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- सुख-दुःख, पाप-पुण्य आदि।

घ. अल्पविराम- जहाँ मध्य में अथवा किसी कारण बहुत थोड़ा रुकना हो, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है।

जैसे - जहाँ एक ही प्रकार के शब्दों को अलग- अलग हो - मोहन , सीता , गीता और राधा ने सर्कस देखा।

अर्द्ध विराम - वाक्य में अल्प विराम से थोड़ा अधिक रुकने के लिए अर्द्ध विराम (;) का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग कर एक बड़े वाक्य में एक से अधिक छोटे वाक्यों को जोड़ते हैं, जैसे - सूरज निकला ; धूप निकल उठी ; पक्षी चहचहा उठे।

ड. उद्धरण चिह्न - किसी के नाम अथवा कथन को ज्यों-का-त्यों लिखने के लिए उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

<u>पाठ-15 (शब्द-भंडार)</u>

1. क. आँख - नेत्र , लोचन , नयन

   ख. घोड़ा - अश्व , तुरंग , बाजि

   ग. तालाब - खडग , कृपाण , असि

   घ. पुत्र - सुत , आत्मज , नंदन

   ड. सूर्य - रवि , भानु , दिनकर

2. क. हमें प्रभु का भजन करना चाहिए।

   ख. कीचड़ में पंकज, खिलता है।

   ग. आकाश में भानु चमक रहा है।

   घ. हम धरती पर रहते है।

   ड. यह गुलाब का पुष्प है।

   च. रावण एक असुर था।

छ. गला चिंघाड़ रहा था।

3. क. आकाश - नभ , गगन

ख. कमल - पंकज , नीरज

ग. पर्वत - पहाड़ , गिरि

घ. बादल - मेघ , घन

ड. समुद्र - सागर , जलधि

<u>विलोम शब्द</u>

1. अमीर - गरीब प्राचीन - नवीन अच्छा - बुरा

उदय -अस्त आशा - निराशा मित्र - शत्रु

कोमल - कठोर राजा - रंक सौभाग्य - दुर्भाग्य

2. अनर्थ लाभ

बुरा पराजय

विपक्ष अनेक

सरल गर्मी

3. क. रंक

ख. मित्र

ग. अंत

घ. जन्म

ड. उत्तर

<u>अनेक शब्दों के लिए एक शब्द</u>

1. क. अनंत ख. कामचोर ग. थलचर

घ. फूलदान ड. मितव्ययी च. वाचाल छ. स्मरणीय

2. क. चित्रकार - जो चित्र बनाता हो।

ख. सत्यावादी - सत्य बोलने वाला।

ग. निशाचार - रात्रि में विचरण करने वाला।

घ. गुप्तचर - गुप्त बातों का पता लगाने वाला

ड. अनिवार्य - जिसे करना आवश्यक हो।

3. क. जो कभी बूढ़ा न हो अटल

ख. जो टाला न जा सके सत्यवादी

ग. जहाँ पहँचना कठिन हो अजर

घ. जो सुन न सके दुर्गम

ड. सत्य बोलने वाला बधिर

4. क. खरगोश शाकाहारी जंतु है।

ख. हमारा देश वह देश अनुपम है।

ग. मेरा मित्र कामचोर है।

घ. मैं एक ग्रामीण हूँ।

ड. मेरी माँ मृदुभाषी है।

च. राजा हरिश्चंद्र बड़े सत्यवादी थे।

छ. मेरा भाई चित्रकार है।

पाठ-16 (मुहावरें और लोकोक्तियाँ)

1. क. आग बबूला होना खुशियाँ मनाना।

ख. कमर कसना बुरी तरह हराना

ग. घी के दीये जलाना क्रोधित होना

घ. छक्के छुड़ाना भेद खुल जाना

ड. पोल खुलना तैयार होना

2. क. धक्के छुड़ा

ख. दाल नहीं गलती है।

ग. दिल दुखाया है।

घ. मुँह में पानी आ गया।

ड. हिम्मत नहीं हारना।

3. क. अपना काम करना।

ख. भेद खुल जाना।

ग. पछताना।

लोकोक्तियाँ

1. क. अंधों में काना राजा — एक साधन से दो लाभ

ख. एक पंथ दो काज — ऊपरी ठाट-बाट

ग. काला अक्षर भैंस बराबर — मुर्खों में कम पढ़ा लिखा

घ. ढोल के भीतर पोल — मुर्खों को उपदेश देना

ड. भैंस के आगे बीन बजाना — अनपढ़ व्यक्ति।

2. क. मुसीबत को स्वंय बुलाना।

ख. अधिक चाहने वाले को थोड़ा मिलना।

ग. मुसीबत पर मुसीबत आना।

घ. हर तरफ से लाभ होना।

ड. सत्य इतना मजबूत होता है कि उसके सामने कोई झूठ नहीं टिक सकता है।

3. क. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

ख. एक पंथ दो काज।

ग. भैंस के आगे बीन बजाना।

घ. ऊँट के मुँह में जीरा।

ड. अंधों में काना राजा।